

سُورَةُ غَافِرٍ

Surah 40 — Ghafir (The Forgiver) · Meccan · 85 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

(इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना (खास बारगाहे) खुदा से है जो (सबसे) ग़ालिब बड़ा वाक्फ़िकार है

3

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ إِلَيْهِ
الْمَصِيرُ

गुनाहों का बख्शाने वाला और तौबा का कुबूल करने वाला सख्त अज़ाब देने वाला साहिबे फज़ल व करम है उसके सिवा कोई
माबूद नहीं उसी की तरफ (सबको) लौट कर जाना है

4

مَا يُجَدِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَا يَغْرُرُكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبَلَدِ

खुदा की आयतों में बस वही लोग झगड़े पैदा करते हैं जो काफिर हैं तो (ऐ रसूल) उन लोगों का शहरों (शहरों) घूमना फिरना
और माल हासिल करना

5

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۚ وَالْأَحْزَابُ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ ۚ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ

لِيَأْخُذُوهُ ۚ وَجَدُلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ

तुम्हें इस धोखे में न डाले (कि उन पर अज़ाब न होगा) इन के पहले नूह की क़ौम ने और उन के बाद और उम्मतों ने (अपने
पैगम्बरों को) झुठलाया और हर उम्मत ने अपने पैगम्बरों के बारे में यही ठान लिया कि उन्हें गिरफ्तार कर (के क़त्ल कर डालें)
और बेहूदा बातों की आड़ पकड़ कर लड़ने लगे - ताकि उसके ज़रिए से हक़ बात को उखाड़ फेंकें तो मैंने, उन्हें गिरफ्तार कर
लिया फिर देखा कि उन पर (मेरा अज़ाब कैसा (सख्त हुआ)

6

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ

और इसी तरह तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब का हुक्म (उन) काफ़ि़रों पर पूरा हो चुका है कि यह लोग यकीनी जहन्नुमी हैं

7

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ ۖ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ رَّحْمَةً ۖ وَعِلْمًا ۖ فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ
تَابُوا ۖ وَاتَّبِعُوا ۖ سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ

जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के गिर्दा गिर्द (तैनात) हैं (सब) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़्शिश की दुआएं माँगा करते हैं कि परवरदिगार तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ पर अहाता किए हुए हैं, तो जिन लोगों ने (सच्चे) दिल से तौबा कर ली और तेरे रास्ते पर चले उनको बख़्श दे और उनको जहन्नुम के अज़ाब से बचा ले

8

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ ءَابَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وَضُرَيْبَتِهِمْ ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

ऐ हमारे पालने वाले इन को सदाबहार बाग़ों में जिनका तूने उन से वायदा किया है दाखिल कर और उनके बाप दादाओं और उनकी बीवीयों और उनकी औलाद में से जो लोग नेक हो उनको (भी बख़्श दें) बेशक तू ही ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है

9

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۖ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۖ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ

और उनको हर किस्म की बुराइयों से महफूज़ रख और जिसको तूने उस दिन (कयामत) के अज़ाबों से बचा लिया उस पर तूने बड़ा रहम किया और यही तो बड़ी कामयाबी है

10

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى
الْإِيمَنِ فَتَكْفُرُونَ

(हाँ) जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया उनसे पुकार कर कह दिया जाएगा कि जितना तुम (आज) अपनी जान से बेज़ार हो उससे बढ़कर खुदा तुमसे बेज़ार था जब तुम ईमान की तरफ बुलाए जाते थे तो कुफ़्र करते थे

11

قَالُوا ۚ رَبَّنَا أَمَتْنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ ۚ مِّن سَبِيلٍ ۚ

वह लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार तू हमको दो बार मार चुका और दो बार ज़िन्दा कर चुका तो अब हम अपने गुनाहों का एकरार करते हैं तो क्या (यहाँ से) निकलने की भी कोई सबील है

12

ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ ۖ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ ۖ كَفَرْتُمْ ۚ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ ۖ تَوَمَّنُوا ۚ ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ

ये इसलिए कि जब तन्हा खुदा पुकारा जाता था तो तुम ईन्कार करते थे और अगर उसके साथ शिर्क किया जाता था तो तुम मान लेते थे तो (आज) खुदा की हुकूमत है जो आलीशान (और) बुर्जुग है

13

هُوَ الَّذِي يُرِيكُم ءَايَاتِهِ ۚ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ

वही तो है जो तुमको (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी नाज़िल करता है और नसीहत तो बस वही हासिल करता है जो (उसकी तरफ) रूज़ू करता है

14

فَادْعُوا ۚ اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

पस तुम लोग खुदा की इबादत को खालिस करके उसी को पुकारो अगरचे कुफ़ार बुरा मानें

15

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ ۚ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ

खुदा तो बड़ा आली मरतबा अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से 'वही' नाज़िल करता है ताकि (लोगों को) मुलाकात (क़यामत) के दिन से डराएँ

16

يَوْمَ هُمْ بَرْزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۚ لِلَّهِ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ

जिस दिन वह लोग (कब्रों) से निकल पड़ेंगे (और) उनको कोई चीज़ खुदा से पोशीदा नहीं रहेगी (और निदा आएगी) आज किसकी बादशाहत है (फिर खुदा खुद कहेगा) खास खुदा की जो अकेला (और) गालिब है

17

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ ۚ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

आज हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज किसी पर कुछ भी जुल्म न किया जाएगा बेशक खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

18

وَأَنْذَرُهُمْ يَوْمَ الِءَازِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُظْمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
حَمِيمٍ ۚ وَلَا شَفِيعٍ ۚ يُطَاعُ

(ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस दिन से डराओ जो अनकरीब आने वाला है जब लोगों के कलेजे घुट घुट के (मारे डर के) मुँह को आ जाएंगे (उस वक्त) न तो सरकशों का कोई सच्चा दोस्त होगा और न कोई ऐसा सिफारिशी जिसकी बात मान ली जाए

19

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ

खुदा तो आँखों की दुज्जदीदा (खयानत की) निगाह को भी जानता है और उन बातों को भी जो (लोगों के) सीनों में पोशीदा है

20

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

और खुदा ठीक ठीक हुक्म देता है, और उसके सिवा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं वह तो कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते, इसमें शक नहीं कि खुदा सुनने वाला देखने वाला है

﴿۱﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ﴿۲﴾ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الَّذِينَ كَانُوا ﴿۳﴾ مِنْ قَبْلِهِمْ ﴿۴﴾ كَانُوا ﴿۵﴾ هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ﴿۶﴾ وَءَاثَارُ ﴿۷﴾ فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ﴿۸﴾

क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम क्या हुआ (हालाँकि) वह लोग कुवत (शान और उम्र सब) में और ज़मीन पर अपनी निशानियाँ (यादगारें इमारतें) वगैरह छोड़ जाने में भी उनसे कहीं बढ़ चढ़ के थे तो खुदा ने उनके गुनाहों की वजह से उनकी ले दे की, और खुदा (के ग़ज़ब से) उनका कोई बचाने वाला भी न था

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا ﴿۱﴾ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ﴿۲﴾ إِنَّهُ ﴿۳﴾ قَوِيٌّ ﴿۴﴾ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ये इस सबब से कि उनके पैग़म्बरान उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े ले कर आए इस पर भी उन लोगों ने न माना तो खुदा ने उन्हें ले डाला इसमें तो शक ही नहीं कि वह क़वी (और) सख्त अज़ाब वाला है

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ ﴿۱﴾ مُبِينٍ

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलीलें देकर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَمٰنَ وَقُرُونَ فَقَالُوا ﴿۱﴾ سِحْرٌ ﴿۲﴾ كَذَّابٌ ﴿۳﴾

फिरऔन और हामान और क़ारून के पास भेजा तो वह लोग कहने लगे कि (ये तो) एक बड़ा झूठा (और) जादूगर है

فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا ﴿۱﴾ أَقْتُلُوا ﴿۲﴾ أَبْنَاءَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ﴿۳﴾ مَعَهُ ﴿۴﴾ وَأَسْتَحْيُوا ﴿۵﴾ نِسَاءَهُمْ ﴿۶﴾ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ﴿۷﴾

गरज़ जब मूसा उन लोगों के पास हमारी तरफ से सच्चा दीन ले कर आये तो वह बोले कि जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उनके बेटों को तो मार डालो और उनकी औरतों को (लौन्डिया बनाने के लिए) ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों की तद्बीरें तो बे ठिकाना होती हैं

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ

और फिरऔन कहने लगा मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को तो क़त्ल कर डालूँ, और (मैं देखूँ) अपने परवरदिगार को तो अपनी मदद के लिए बुला लें (भाईयों) मुझे अन्देशा है कि (मुबादा) तुम्हारे दीन को उलट पुलट कर डाले या मुल्क में फ़साद पैदा कर दें

وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ ۚ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

और मूसा ने कहा कि मैं तो हर मुताकब्बिर से जो हिसाब के दिन (क़यामत पर ईमान नहीं लाता) अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूँ

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَنَهُ ۚ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ

اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَإِنْ يَكُ كَذِبًا ۖ فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَكُ

صَادِقًا ۖ يَصِيبُكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ ۚ كَذَابٌ ۚ

और फिरऔन के लोगों में एक ईमानदार शख्स (हिज़कील) ने जो अपने ईमान को छिपाए रहता था (लोगों से कहा) कि क्या तुम लोग ऐसे शख्स के क़त्ल के दरपै हो जो (सिर्फ) ये कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है) हालाँकि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास मौजिज़े लेकर आया और अगर (बिल ग़रज़) ये शख्स झूठा है तो इसके झूठ का बवाल इसी पर पड़ेगा और अगर यह कहीं सच्चा हुआ तो जिस (अज़ाब की) तुम्हें ये धमकी देता है उसमें से कुछ तो तुम लोगों पर ज़रूर वाकेए होकर रहेगा बेशक खुदा उस शख्स की हिदायत नहीं करता जो हद से गुज़रने वाला (और) झूठा हो

يَقُومُ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ

جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ

ऐ मेरी क़ौम आज तो (बेशक) तुम्हारी बादशाहत है (और) मुल्क में तुम्हारा ही बोल वाला है लेकिन (कल) अगर खुदा का अज़ाब हम पर आ जाए तो हमारी कौन मदद करेगा फिरऔन ने कहा मैं तो वही बात समझाता हूँ जो मैं खुद समझता हूँ और वही राह दिखाता हूँ जिसमें भलाई है

وَقَالَ الَّذِي ءَامَنَ يَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ

तो जो शख्स (दर पर्दा) ईमान ला चुका था कहने लगा, भाईयों मुझे तो तुम्हारी निस्बत भी और उम्मतों की तरह रोज़ (बद) का अन्देशा है

مِثْلَ دَابِّ قَوْمِ نُوحٍ ۚ وَعَادٍ ۚ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ

(कहीं तुम्हारा भी वही हाल न हो) जैसा कि नूह की क्रौम और आद समूद और उनके बाद वाले लोगों का हाल हुआ और खुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना चाहता ही नहीं

وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ

और ऐ हमारी क्रौम मुझे तो तुम्हारी निस्बत कयामत के दिन का अन्देशा है

يَوْمَ تُولُونِ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۚ

जिस दिन तुम पीठ फेर कर (जहन्नुम) की तरफ चल खड़े होगे तो खुदा के (अज़ाब) से तुम्हारा बचाने वाला न होगा, और जिसको खुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई रूबराह करने वाला नहीं

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ ۚ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ ۚ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ ۚ رَسُولًا ۚ ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ ۚ ۚ مُرْتَابٌ

और (इससे) पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास मौजिज़े लेकर आए थे तो जो जो लाए थे तुम लोग उसमें बराबर शक ही करते रहे यहाँ तक कि जब उन्होंने वफात पायी तो तुम कहने लगे कि अब उनके बाद खुदा हरगिज़ कोई रसूल नहीं भेजेगा जो हद से गुज़रने वाला और शक करने वाला है खुदा उसे यू ही गुमराही में छोड़ देता है

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُتَكَبِّرٍ ۚ جَبَّارٍ ۚ

जो लोग बगैर इसके कि उनके पास कोई दलील आई हो खुदा की आयतों में (ख्वाह मा ख्वाह) झगड़े किया करते हैं वह खुदा के नज़दीक और ईमानदारों के नज़दीक सख्त नफरत खेज़ हैं, यूँ खुदा हर मुतकब्बिर सरकश के दिल पर अलामत मुकर्रर कर देता है

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ لِي صِرَاحًا ۚ لَعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ

और फिरऔन ने कहा ऐ हामान हमारे लिए एक महल बनवा दे ताकि (उस पर चढ़ कर) रसतों पर पहुँच जाऊँ

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَأَطَّلَعَ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لِأَظُنُّهُ ۚ كَذِبًا ۚ وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءَ عَمَلِهِ ۚ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۚ

(यानि) आसमानों के रसतों पर फिर मूसा के खुदा को झाँक कर (देख) लूँ और मैं तो उसे यक़ीनी झूठा समझता हूँ, और इसी तरह फिरऔन की बदकिरदारयाँ उसको भली करके दिखा दी गयीं थीं और वह राहे रास्ता से रोक दिया गया था, और फिरऔन की तद्वीर तो बस बिल्कुल शारत गुल ही थीं

وَقَالَ الَّذِي ءَامَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِيكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ

और जो शख्स (दर पर्दा) ईमानदार था कहने लगा भाईयों मेरा कहना मानों मैं तुम्हें हिदायत के रास्ते दिख दूँगा

يَقَوْمِ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَّعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ

भाईयों ये दुनियावी ज़िन्दगी तो बस (चन्द रोज़ा) फ़ायदा है और आख़ेरत ही हमेशा रहने का घर है

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً ۚ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۚ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۚ فَأُو۟لَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

जो बुरा काम करेगा तो उसे बदला भी वैसा ही मिलेगा, और जो नेक काम करेगा मर्द हो या औरत मगर ईमानदार हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में दाख़िल होंगे वहाँ उन्हें बेहिसाब रोज़ी मिलेगी

﴿ وَيَقَوْمَ مَا لِيَ ادْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۚ ﴾

और ऐ मेरी कौम मुझे क्या हुआ है कि मैं तुमको नजाद की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे दोज़ख की तरफ बुलाते हो

﴿ تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ ۚ مَا لِيَ لِي بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ وَأَنَا ۚ ادْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفْرِ ۚ ﴾

तुम मुझे बुलाते हो कि मैं खुदा के साथ कुफ्र करूँ और उस चीज़ को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे इल्म में भी नहीं, और मैं तुम्हें ग़ालिब (और) बड़े बख्शने वाले खुदा की तरफ बुलाता हूँ

﴿ لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ ۚ دَعْوَةٌ ۚ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي آخِرَةِ وَأَنْ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ ﴾

बेशक तुम जिस चीज़ की तरफ मुझे बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के काबिल है और न आखिरत में और आखिर में हम सबको खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है और इसमें तो शक ही नहीं कि हद से बढ़ जाने वाले जहन्नुमी हैं

﴿ فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأَفْوَضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ ۚ بِالْعِبَادِ ۚ ﴾

तो जो मैं तुमसे कहता हूँ अनकरीब ही उसे याद करोगे और मैं तो अपना काम खुदा ही को सौंपे देता हूँ कुछ शक नहीं की खुदा बन्दों (के हाल) को खूब देख रहा है

﴿ فَوَقَّعَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا ۚ ۚ وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۚ ﴾

तो खुदा ने उसे उनकी तद्वियों की बुराई से महफूज़ रखा और फिरऔनियों को बड़े अज़ाब ने (हर तरफ) से घेर लिया

﴿ النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا ۚ وَعَشِيًّا ۚ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا ۚ آءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۚ ﴾

और अब तो कब्र में दोज़ख की आग है कि वह लोग (हर) सुबह व शाम उसके सामने ला खड़े किए जाते हैं और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (हुक़्म होगा) फिरऔन के लोगों को सख्त से सख्त अज़ाब में झोंक दो

وَإِذْ يَتَحَاوُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا ۚ مِنَ النَّارِ

और ये लोग जिस वक्त ज़हन्नुम में बाहम झगड़ेंगे तो कम हैसियत लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम इस वक्त (दोज़ख की) आग का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ

तो बड़े लोग कहेंगे (अब तो) हम (तुम) सबके सब आग में पड़े हैं खुदा (को) तो बन्दों के बारे में (जो कुछ) फैसला (करना था) कर चुका

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا ۖ مِّنَ الْعَذَابِ

और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे ज़हन्नुम के दरोगाओं से दरखास्त करेंगे कि अपने परवरदिगार से अर्ज़ करो कि एक दिन तो हमारे अज़ाब में तख्फ़ीफ़ कर दें

قَالُوا ۖ أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا ۖ بَلَىٰ ۖ قَالُوا ۖ فَادْعُوا ۖ ۚ وَمَا دُعَاؤُا ۖ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ

वह जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर साफ व रौशन मौजिज़े लेकर नहीं आए थे वह कहेंगे (हाँ) आए तो थे, तब फरिश्ते तो कहेंगे फिर तुम खुद (क्यों) न दुआ करो, हालाँकि काफ़ि़रों की दुआ तो बस बेकार ही है

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهُدٰٓءُ

हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी ज़रूर मदद करेंगे और जिस दिन गवाह (पैग़म्बर फरिश्ते गवाही को) उठ खड़े होंगे

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذِرَتُهُمْ ۖ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ

(उस दिन भी) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़ेरत कुछ भी फायदे न देगी और उन पर फिटकार (बरसती) होगी और उनके लिए बहुत बुरा घर (ज़हन्नुम) है

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ

और हम ही ने मूसा को हिदायत (की किताब तौरत) दी और बनी इसराईल को (उस) किताब का वारिस बनाया

هُدًى وَذِكْرَى لِأُولَى الْأَلْبَابِ

जो अक्लमन्दों के लिए (सरतापा) हिदायत व नसीहत है

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَأَسْتَغْفِرْ لِدُنْكَ بِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَرِ

(ऐ रसूल) तुम (उनकी शरारत) पर सब्र करो बेशक खुदा का वायदा सच्चा है, और अपने (उम्मत की) गुनाहों की माफी माँगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की हम्द व सना के साथ तसबीह करते रहो

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ ۖ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ ۖ مَا هُمْ بِبَالِغِيهِ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ ۖ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

जिन लोगों के पास (खुदा की तरफ से) कोई दलील तो आयी नहीं और (फिर) वह खुदा की आयतों में (स्वाह मा स्वाह) झगड़े निकालते हैं, उनके दिल में बुराई (की बेजा हवस) के सिवा कुछ नहीं हालाँकि वह लोग उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं तो तुम बस खुदा की पनाह माँगते रहो बेशक वह बड़ा सुनने वाला (और) देखने वाला है

لَخَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने की ये निस्वत यक़ीनी बड़ा (काम) है मगर अक्सर लोग (इतना भी) नहीं जानते

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَعَمِلُوا ۖ الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا ۚ مَا تَتَذَكَّرُونَ

और अंधा और आँख वाला (दोनों) बराबर नहीं हो सकते और न मोमिनीन जिन्होंने अच्छे काम किए और न बदकार (ही) बराबर हो सकते हैं बात ये है कि तुम लोग बहुत कम गौर करते हो, कयामत तो ज़रूर आने वाली है

إِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ ۖ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

इसमें किसी तरह का शक नहीं मगर अक्सर लोग (इस पर भी) ईमान नहीं रखते

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ

और तुम्हारा परवरदिगार इरशाद फ़रमाता है कि तुम मुझसे दुआएं माँगों मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूँगा जो लोग हमारी इबादत से अकड़ते हैं वह अनकरीब ही ज़लील व ख़्बार हो कर यक़ीनन जहन्नुम वासिल होंगे

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا ۖ فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

खुदा ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को रौशन (बनाया) ताकि काम करो बेशक खुदा लोगों परा बड़ा फज़ल व करम वाला है, मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं अदा करते

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ

यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है जो हर चीज़ का ख़ालिक है, और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो

كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا ۖ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार रखते थे वह इसी तरह भटक रहे थे

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا ۖ وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो अच्छी सूरतें बनायीं और उसी ने तुम्हें साफ सुथरी चीज़ें खाने को दीं यही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है तो खुदा बहुत ही मुतबरिक है जो सारे जहाँ का पालने वाला है

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

वही (हमेशा) ज़िन्दा है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो निरी खरी उसी की इबादत करके उसी से ये दुआ माँगो, सब तारीफ खुदा ही को सज़ावार है और जो सारे जहाँ का पालने वाला है

ۚ قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जब मेरे पास मेरे परवरदिगार की बारगाह से खुले हुए मौजिजे आ चुके तो मुझे इस बात की मनाही कर दी गयी है कि खुदा को छोड़ कर जिनको तुम पूजते हो मैं उनकी परसतिश करूँ और मुझे तो यह हुक्म हो चुका है कि मैं सारे जहाँ के पालने वाले का फरमावरदार बनू

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ۚ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ۚ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ۚ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ۚ ثُمَّ لِتَبْلُغُوا ۚ أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا ۚ شِوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُتَوَفَّىٰ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلِتَبْلُغُوا ۚ أَجَلًا ۚ أَوْ مُسَمَّمًا ۚ فَيُلْقِيَكُمْ فِي سُقْرٍ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

वही वह खुदा है जिसने तुमको पहले (पहल) मिटटी से पैदा किया फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून फिर तुमको बच्चा बनाकर (माँ के पेट) से निकलता है (ताकि बढ़ों) फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो फिर (और ज़िन्दा रखता है ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुममें से कोई ऐसा भी है जो (इससे) पहले मर जाता है शरज़ (तुमको उस वक्त तक ज़िन्दा रखता है) की तुम (मौत के) मुकरर वक्त तक पहुँच जाओ

هُوَ الَّذِي يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۚ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۚ كُنْ فَيَكُونُ

और ताकि तुम (उसकी कुदरत को समझो) वह वही (खुदा) है जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उससे कह देता है कि 'हो जा' तो वह फ़ौरन हो जाता है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों (की हालत) पर गौर नहीं किया जो खुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं

الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ ۚ رُسُلَنَا ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

ये कहाँ भटके चले जा रहे हैं, जिन लोगों ने किताबे (खुदा) और उन बातों को जो हमने पैग़म्बरों को देकर भेजा था झुठलाया तो बहुत जल्द उसका नतीजा उन्हें मालूम हो जाएगा

إِذِ الْأَغْلُلُ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ

जब (भारी भारी) तौक़ और ज़ंजीरें उनकी गर्दनो में होंगी (और पहले) खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ

फिर (जहन्नुम की) आग में झोंक दिए जाएँगे

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ

फिर उनसे पूछा जाएगा कि खुदा के सिवा जिनको (उसका) शरीक बनाते थे

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قَالُوا ۚ ضَلُّوا ۚ عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا ۚ مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ

(इस वक्त) क़हाँ हैं वह कहेंगे अब तो वह हमसे जाते रहे बल्कि (सच यूँ है कि) हम तो पहले ही से (खुदा के सिवा) किसी चीज़ की परसतिश न करते थे यूँ खुदा काफ़िरो को बौखला देगा

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَمِمَّا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ

(कि कुछ समझ में न आएगा) ये उसकी सज़ा है कि तुम दुनिया में नाहक (बात पर) निहाल थे और इसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे

أَدْخُلُوا ۚ أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ

अब जहन्नुम के दरवाज़े में दाखिल हो जाओ (और) हमेशा उसी में (पड़े) रहो, गरज़ तकबुर करने वालों का भी (क्या) बुरा ठिकाना है

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا
يَرْجِعُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम सब करो खुदा का वायदा यकीनी सच्चा है तो जिस (अज़ाब) की हम उन्हें धमकी देते हैं अगर हम तुमको उसमें कुछ दिखा दें या तुम ही को (इसके क़ब्र) दुनिया से उठा लें तो (आखिर फिर) उनको हमारी तरफ लौट कर आना है,

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا ۖ مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ
عَلَيْكَ ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ
بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ

और तुमसे पहले भी हमने बहुत से पैग़म्बर भेजे उनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमसे बयान कर दिए, और कुछ ऐसे हैं जिनके हालात तुमसे नहीं दोहराए और किसी पैग़म्बर की ये मज़ाल न थी कि खुदा के ऐख़्तियार दिए बग़ैर कोई मौजिज़ा दिखा सकें फिर जब खुदा का हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा तो ठीक ठीक फैसला कर दिया गया और अहले बातिल ही इस घाटे में रहे,

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا ۖ مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

खुदा ही तो वह है जिसने तुम्हारे लिए चारपाए पैदा किए ताकि तुम उनमें से किसी पर सवार होते हो और किसी को खाते हो

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا ۖ عَلَيْهَا حَاجَةٌ ۖ فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تَحْمَلُونَ

और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) फायदे हैं और ताकि तुम उन पर (चढ़ कर) अपनी दिली मक़सद तक पहुँचो और उन पर और (नीज़) कश्तियों पर सवार फिरते हो

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۖ فَآيٌ ءَايَتِ اللَّهِ تُنَكِّرُونَ

और वह तुमको अपनी (कुदरत की) निशानियाँ दिखाता है तो तुम खुदा की किन किन निशानियों को न मानोगे

أَفَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا ۚ أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً ۚ وَءَاثَارًا ۚ ۱ فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

तो क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं, तो देखते कि जो लोग इनसे पहले थे उनका क्या अंजाम हुआ, जो उनसे (तादाद में) कहीं ज्यादा थे और क़वत और ज़मीन पर (अपनी) निशानियाँ (यादगारें) छोड़ने में भी कहीं बढ़ चढ़ कर थे तो जो कुछ उन लोगों ने किया कराया था उनके कुछ भी काम न आया

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَحُوا ۚ بِمَا عِنْدَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا ۚ بِهِ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

फिर जब उनके पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए व रौशन मौज़िज़े ले कर आए तो जो इल्म (अपने ख़याल में) उनके पास था उस पर नाज़िल हुए और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाते थे उसी ने उनको चारों तरफ से घेर लिया

فَلَمَّا رَأَوْا ۚ بَأْسَنَا قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَحَدُّهُ ۚ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ ۚ مُشْرِكِينَ

तो जब इन लोगों ने हमारे अज़ाब को देख लिया तो कहने लगे, हम यकता खुदा पर ईमान लाए और जिस चीज़ को हम उसका शरीक बनाते थे हम उनको नहीं मानते

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا ۚ بَأْسَنَا ۚ سُنَّتَ اللَّهُ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۚ ۱ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ

तो जब उन लोगों ने हमारा (अज़ाब) आते देख लिया तो अब उनका ईमान लाना कुछ भी फायदेमन्द नहीं हो सकता (ये) खुदा की आदत (है) जो अपने बन्दों के बारे में (सदा से) चली आती है और काफ़िर लोग इस वक्त घाटे में रहे